# प्रशिक्षण शिष्यों को प्रशिक्षित करना
# सत्र 27: शिष्यत्व की गतिशीलता (11c)

रॉन लाइवली, एम.डिव., एम.ए. द्वारा प्रस्तुत – BiblicalMentoring.org (अध्ययन)

**चरण 1**: प्रारंभिक प्रार्थना

**चरण 2**: हर व्यक्ति स्मृति श्लोक उद्धृत करता है: छंद चरण: **2 तीमुथियुस 4:2**
***2 वचन का प्रचार करें; मौसम के समय और मौसम के बाहर तैयार रहें;***
***पूर्ण धैर्य और शिक्षा के साथ फटकारना, फटकारना, और उपदेश देना***

**चरण 3**: *बाइबल अध्याय के पूरे या कुछ हिस्से को पढ़ें और चर्चा करें* - **2 तीमुथियुस 4**
**लिंक:** https://www.biblegateway.com/passage/?search=2%20Timothy%204&version=ESV

***चरण 4:*** व्यक्तिगत आवेदन और/या समूह चर्चाओं के लिए प्रश्न:

एक. हमारे मन मसीह में पुनर्जीवित (नवीनीकृत) हो सकते हैं। इसका मतलब है कि हम नए विचार सोच सकते हैं, नए सत्य सीख सकते हैं और नए तरीके से जी सकते हैं। यही कारण है कि नए विश्वासी उत्साहित होते हैं।

दो. यह एक सत्य है कि मसीह के शिष्य के रूप में जो परमेश्वर के वचन के माध्यम से उसकी इच्छा प्राप्त करते हैं, हम परमेश्वर की महिमा (स्तुति) लाने के लिए नए निर्णय लेने के लिए सुसज्जित हैं।

तीन. फिलिप्स सुझाव देते हैं कि हम चार प्रश्न पूछें ताकि गलत निर्णय लेने से बचा जा सके जो मसीह के कारण को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

चार. मसीह ने सुनिश्चित किया कि उनके शिष्य शास्त्रों की सच्चाइयों को जानें और परमेश्वर का सम्मान करने वाले निर्णय कैसे लें।

***चरण 5:*** *पुस्तक की सामग्री पढ़ें और चर्चा करें:*
अध्याय 11c लेखक – कीथ फिलिप्स के अनुसार:

***अपने शिष्य को सोचना सिखाएं.*** *जब आपका शिष्य मसीह में एक नई सृष्टि बना, तो परमेश्वर ने अपने मन को नवीनीकृत किया (1 कुरिन्थियों 2:12)। अब परमेश्वर अपेक्षा करता है कि वह अपनी पुनर्जीवित क्षमताओं का उपयोग करे। पौलुस प्रोत्साहित करता है, "और इस संसार के अनुरूप न बनो, बल्कि अपने मन के नवीनीकरण से परिवर्तित हो जाओ, ताकि तुम साबित कर सको कि परमेश्वर की इच्छा क्या है..." (रोमियों 12:2)। मसीह ने अपने शिष्यों को सोचने के लिए मजबूर करके सोचने की शिक्षा दी। उन्होंने ऐसे उत्तेजक प्रश्न पूछे जो आत्म-खोज को प्रोत्साहित करते थे। वे अक्सर उनके प्रश्नों का उत्तर अन्य प्रश्नों से देते थे। दृष्टांतों में उनकी शिक्षाएँ उन्हें उनके शब्दों के अर्थ पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करती थीं। अपने शिष्य को बाइबल अध्ययन के खोज विधियों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करके सोचना सिखाएं। उसे बाइबिल के किसी अंश की ओर निर्देशित करें और उसमें निहित सत्य को खोजने दें। ऐसे प्रश्न पूछें या सुझाव दें जो मार्ग दिखाएं। उसके प्रश्नों को फिर से शब्दबद्ध करें और उससे पूछें कि वह क्या सोचता है। कभी भी उस सवाल का जवाब न दें जिसका उसने जवाब देने की कोशिश नहीं की हो। अगर वह खुद बाइबिल के सिद्धांत पाएगा तो वह बेहतर सीखेगा बजाय इसके कि उसे आपसे कोई सामान्य जवाब या सिद्ध सूत्र मिले। उदाहरण के लिए, अगर फ्रेड स्टोएज़, हमारे लॉस एंजिल्स पुरुष निदेशक, मुझसे पूछें कि क्या थुआन या चार्ल्स को नए स्टाफ सदस्य के साथ एक-से-एक संबंध बनाना चाहिए, तो मैं उन्हें 1 तीमुथियुस 3 का अध्ययन करने के लिए निर्देशित करूंगा। फिर मैं उनसे कई सवाल पूछूंगा: इस व्यक्ति को प्रशिक्षित करने के लिए सबसे उपयुक्त कौन है? किसके पास सबसे अधिक उपलब्ध समय है? क्या ऐसे अन्य लोग हैं जो नए स्टाफ सदस्य का बेहतर नेतृत्व कर सकते हैं? आपके अनुसार कौन सबसे अच्छा विकल्प है? क्यों? फ्रेड आमतौर पर सही समाधान खुद निकालते हैं।*

*अपने शिष्य को प्रोत्साहित करें कि वह आपको जितनी बार चाहे लिखें। लिखित संचार सटीकता और स्पष्टता को बढ़ावा देता है क्योंकि यह उसे अपने प्रश्नों और आवश्यकताओं पर विचार करने में सक्षम बनाता है। अक्सर, वह अपनी चिंता के क्षेत्र को पहचानता है या लिखते समय स्वयं उत्तर खोज लेता है।*

***अपने शिष्य को निर्णय लेना सिखाएं।***

*यीशु ने जोर दिया कि उनके शिष्यों के निर्णय परमेश्वर की इच्छा पर आधारित हों। जब मसीह के शिष्यों ने परमेश्वर की इच्छा को उसके शब्दों के माध्यम से प्राप्त किया (यूहन्ना 14:24), तो वे निर्णय लेने के लिए सक्षम थे (यूहन्ना 17:8)। चूंकि शिष्य की निर्णय प्रक्रिया परमेश्वर की इच्छा और वचन पर आधारित होती है, यह स्व-केंद्रित, सांसारिक दृष्टिकोण से काफी भिन्न होती है। अपने शिष्य को सिखाएं कि गलत निर्णयों से बचने के लिए जो मसीह के कारण को नकारात्मक रूप से प्रभावित करें, उसे चार प्रश्नों के उत्तर देने होंगे:*

***1. विकल्प क्या हैं?*** *आपके शिष्य को सभी संभावित विकल्पों का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन करना चाहिए, उन लोगों से बात करके जो तथ्य जानते हैं और उन लोगों से जो निर्णय से प्रभावित होंगे। उसे बुद्धिमानी से निर्णय लेने के लिए पर्याप्त डेटा चाहिए। नीतिवचन 15:28 सलाह देता है: "धर्मी का हृदय सोचता है कि कैसे उत्तर दे...." दबाव में लिए गए त्वरित निर्णय आमतौर पर केवल अनुमान होते हैं।*

***2. बाइबिल के कौन से सिद्धांत लागू होते हैं****? चूंकि आपका शिष्य परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए प्रतिबद्ध है, इसलिए कोई भी निर्णय बाइबिल के सिद्धांत के विपरीत नहीं होना चाहिए। परमेश्वर के वचन पर आधारित परिपक्व सोच आत्मविश्वास से निर्णय लेने और मसीह को महिमामंडित करने वाले कार्यों की ओर ले जाती है।*

***3. इसके क्या निहितार्थ हैं****? आपका शिष्य निर्णय के संभावित दूरगामी प्रभावों की जांच करेगा। थोड़ा पूर्वविचार कई गलतियों और दुखों से बचा जा सकता है।*

***4. मेरे नेताओं की सलाह क्या है?*** *जब आपका शिष्य विकल्पों, सिद्धांतों और निहितार्थों को सोच ले, तो उसे ये आपके सामने प्रस्तुत करने चाहिए। प्रार्थना करें और साथ में परमेश्वर के वचन का अध्ययन करें, उसकी दिशा खोजें। आपका शिष्य "शांति के बंधन में आत्मा की एकता बनाए रखने के लिए परिश्रमी" होना चाहिए (इफिसियों 4:3)। चूंकि शरीर में सहयोग एकता बनाए रखता है, इसलिए सबसे अच्छे निर्णय तब लिए जाते हैं जब वे आपके ऊपर अधिकार रखने वालों के साथ मिलकर लिए जाते हैं। सलाह लेने से वह ऐसे निर्णय लेने से बच सकता है जो बढ़ते हुए लगते हैं लेकिन दूसरों को नुकसान पहुंचा सकते हैं क्योंकि वह महत्वपूर्ण कारकों से अनजान है। प्रत्येक स्थिति अलग होती है और विशिष्ट प्रार्थना और मार्गदर्शन की मांग करती है। मैं समझाता हूँ कि यह कैसे काम करता है। मान लीजिए कि आप हमारे स्टाफ में हैं और अभी-अभी एक अत्यंत थकाऊ मंत्रालय माह पूरा किया है। आपके नेताओं ने कर्मचारियों को ताज़ा करने के लिए एक रिट्रीट की योजना बनाई है। फिर, जैसे ही आप जाने वाले होते हैं, आपको एक कॉल आता है जिसमें बताया जाता है कि आपके बाइबल क्लब के किसी परिवार का घर जल चुका है। आपकी तत्काल प्रतिक्रिया यह हो सकती है कि आप रिट्रीट को मिस कर दें ताकि आप परिवार की मदद कर सकें। लेकिन एक ईसाई के रूप में, आपको यह निर्णय उस चीज़ के प्रकाश में लेना चाहिए जो राज्य और शरीर के लिए सबसे अधिक निर्माण कर रहा है। ऐसे महत्वपूर्ण निर्णय केवल भावनात्मक प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि सुविचारित कार्रवाई की मांग करते हैं। आइए इस स्थिति में हमारे चार-चरणीय निर्णय प्रक्रिया को लागू करें:*

***1. विकल्प क्या हैं?*** *(a) रिट्रीट को मिस करना और परिवार को जवाब देना; (b) परिवार को जवाब देना और बाद में ब्रेक लेने का प्रयास करना; (c) क्लब परिवार की आवश्यकता को पूरा करने की जिम्मेदारी को अनदेखा करना, स्थगित करना या सौंपना।*

***2. कौन से बाइबिल सिद्धांत लागू होते हैं?*** *(a) भजन संहिता 46:1 सिखाता है कि एक ईसाई की शक्ति परमेश्वर में पाई जाती है; (b) मरकुस 6:31 स्वीकार करता है कि ईसाइयों को ताज़ा होने की आवश्यकता है; (c) याकूब 2:15,16 ईसाइयों को निर्देश देता है कि वे अपने पड़ोसियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उपलब्ध रहें।*

***3. इसके क्या निहितार्थ हैं?*** *(a) यदि आप रिट्रीट को मिस कर देते हैं, तो आप परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करने और तरोताजा होने की गहरी आवश्यकता को नजरअंदाज करके अपनी प्रभावशीलता में बाधा डाल सकते हैं; (b) यदि आप बाद में ब्रेक लेने की कोशिश करते हैं, तो आपको पहले से नियोजित कई मंत्रालय गतिविधियाँ रद्द करनी पड़ सकती हैं। यह अन्य संबंधों को नुकसान पहुंचा सकता है या आपकी निष्ठा की शिक्षा को नकार सकता है; (c) यदि आप क्लब परिवार की आवश्यकता को नजरअंदाज करते हैं, तो आप उनके साथ अपने संबंध को नुकसान पहुंचा सकते हैं और ईसाई प्रेम दिखाने का एक बड़ा अवसर खो सकते हैं।*

***4. मेरे नेताओं की सलाह क्या है****? अगर मेरी मार्गदर्शन ऐसी स्थिति में मांगी जाए, जिसमें दो विरोधाभासी प्राथमिकताएं हों, तो मैं विकल्पों की समीक्षा करता और फिर हमारी प्राथमिकताओं के प्रकाश में प्रत्येक कार्य के निहितार्थों पर विचार करता: भगवान*

*पहले, शरीर बाद में, मंत्रालय तीसरे। अब आपको ब्रेक की कितनी जरूरत है? क्या आप बाद में कुछ अन्य स्टाफ सदस्यों के साथ बिना अपनी सेवा को खतरे में डाले काम चला सकते हैं? क्या कोई और है जो इस आवश्यकता का उतना ही प्रभावी ढंग से जवाब दे सकता है और इस समय रिट्रीट मिस करने से कम प्रभावित हो सकता है?*

*इन और अन्य लागू प्रश्नों पर विचार करने के बाद, हम यह निर्णय प्रभु को प्रार्थना में सौंपेंगे और विश्वास करेंगे कि परमेश्वर की आत्मा उनकी पूर्ण इच्छा प्रकट करेगी और हमें पुष्टि करेगी। निर्णय लेने में सलाह लेना बुद्धिमत्ता और एकता प्रदान करता है। जब आपका शिष्य राज्य और शरीर की भलाई के प्रकाश में हर निर्णय लेता है, तो वह न केवल पूरे समुदाय के स्वास्थ्य का सम्मान करता है, बल्कि वह स्वयं के लिए सर्वोत्तम मार्गदर्शन प्राप्त करने का भी विश्वास कर सकता है। जब मसीह इस पृथ्वी से गए, तो उनके शिष्य परमेश्वर के वचन को जानते थे और सोचते और निर्णय लेते थे। सुनिश्चित करें कि आपके शिष्य को ये आवश्यक सबक सिखाए जाएं।*

*पृ.124B-128a*

***चरण 6:*** *व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोध साझा करें, फिर प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे की मांगों के लिए प्रार्थना करे।*

**स्रोत**: डॉ. कीथ फिलिप्स द्वारा द मेकिंग ऑफ अ डिसाइपल। प्रकाशक: फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी, 1981। ISBN 0-8007-1181-5। परिचय: रॉबर्ट ई. कोलमैन। सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) पुस्तक से बिना संशोधन के ली गई है।

संशोधित 20261123